Roll No. .....

(12/24)

# 19207

## M. A. EXAMINATION

(For Regular Batch 2022 & Onwards)

(First Semester)

HINDI

MA/HIN/1/DSC3

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-एक विशेष अध्ययन

*Time : Three Hours* *Maximum Marks : 70*

**नोट** : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×2=10

   (क) 'राग-विराग' में संकलित पाँच कविताओं के नाम बताइए ।

   (ख) 'कुल्लु भाट' के प्रमुख पात्रों की गणना कीजिए।

   (ग) 'गजानन्द शास्त्रिणी' की प्रमुख एक समस्या पर प्रकाश डालिए ।

(घ) 'कला की रूपरेखा' कहानी का मुख्य विषय क्या है ?

(ङ) 'कुल्लु भाट' उपन्यास की मुख्य समस्याएँ कौन-कौनसी हैं ?

2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में चित्रित प्रकृति के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिए । 15

**अथवा**

निराला की प्रगतिवादी चेतना की समीक्षा कीजिए ।

3. 'कुल्ली भाट' उपन्यास की तात्विक समीक्षा कीजिए। 15

**अथवा**

'कुल्ली भाट' उपन्यास की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

4. निराला जी की कहानी कला पर प्रकाश डालिए । 15

**अथवा**

'क्या देखा' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।



5. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×5=15

(क) तू सवा साल की जब कोमल
पहचान रही ज्ञान में चपल
माँ का मुख, हो चुम्बित क्षण क्षण,
भरती जीवन में नव जीवन
वह चरित पूर्ण कर गई चली,
तू नाना की गोद जा पली ।

**अथवा**

चढ़ रही थी धूप,
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिंगारी छा गई ।।

(ख) मैं बैठा हुआ फाटक के भीतर घर के बाहर वाले आँगन में लगा चिलबिल का पेड़ देखता रहा । एकाएक ख्याल गया, इसकी डाल पर सावन में झूला पड़ता होगा, उस पर बैठी हुई भरे आकाश के सजल बादलों को देख-देखकर जो सावन,

मल्लार और बारहमासियाँ गाती हुई पैगों में झूलती है, उसे मैं पहचानता हूँ, उसके कुल गीतों का उधर में लक्ष्य रहा हूँगा ।

**अथवा**

कुछ देर तक मैं बैठा रहा । फिर बाहर निकला । कुली की स्त्री रोने लगी । कहा–"रायबरेली ले जाने के लिए कहते हैं। खर्चा यही पाँच रुपया है । डोली में आयेंगे नहीं । लारी कोई आयेगी, यहाँ खाली होगी तो उसमें ले जाऊँगी, लेकिन फिर वहाँ क्या होगा । वहाँ भी खर्चा है ।" कहकर रोने लगी ।

(ग) बच्चे को फिर दासी के हवाले कर दिया । मैं उनके पीछे चला, यह सोचता हुआ कि एकांत में सहधर्मी बनाने का प्रस्ताव न हो । चित्त को काबू में न कर सका, वह पुलकित होता रहा।

**अथवा**

हाँ, पर हवा अच्छी चलती है ।" मारवाड़ी सज्जन बड़े मजेदार आदमी मालूम दिये । मैं उनके उत्तर पर मुसकिरा रहा था, तब तक एक पच्चीस रुपये का टिकट निकालकर उन्होनें कहा, "यह टिकट आपके लिए है ।"